मां का सपना साकार करने का विकल्प - सहज कृषि

२०२३ का सकल्प

Toll Free No. 1800 2700 800

Website: www.sahajkrishi.org

सहजी भाई बहनों,

जय श्री माताजी

भारत में 65% आबादी कृषि एवं पशुपालन पर आश्रित है। सहज योग देहात का है ऐसा श्री माताजी ने बतलाया है। श्री माताजी निर्मला देवी के दर्शन (विजन) को पूरा करने के लिए सहज कृषि सबसे महत्वपूर्ण घटकों में (ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली 65% आबादी) शामिल हो गई है, परिणाम स्वरूप भारत के ग्रामीण समुदाय में सहज योग एवं सहज कृषि का प्रचार कर कृषकों को लाभान्वित किया जा रहा है।

उल्लेखनीय है कि श्री माताजी ने सहस्त्रार पूजा इटली 06.05.2001 को बतलाया की पूरे विश्व को विनाश से बचाना है तो कम से कम 40% लोगों को आत्म साक्षात्कार प्राप्त होना जरूरी है जो किसी राष्ट्रीयता शिक्षा जाति के स्तर की हो। अतः मां का सपना साकार करने में सहज कृषि का विशेष महत्व है।

श्री माताजी ने बतलाया कि वाइब्रेशन (चैतन्य लहरिया, स्पंद) एक जीवंत प्रक्रिया है जो सोचती है और कार्य करती है। जिस प्रकार लोहे का चुंबक पर प्रभाव होता है उसी प्रकार यह कार्य करती है।

सहज योग द्वारा प्रसारित चैतन्य लहरियों का प्रभाव मानव शरीर के उत्थान के साथ-साथ सभी जीवंत चीजों पर क्रमशः पृथ्वी, पानी, वनस्पति, वातावरण पर कार्य करता है, जिसे हम कृषि, बागवानी, पशु पालन, मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन, टिश्यू कल्चर, अन्न धान, सब्जी, फल, मसाले, औषधियां, फूलों की खेती इत्यादि में अधिक गुणवत्ता उत्पादन ले कर आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होकर किसान खुशहाल हो सकता है।

सहज कृषि में सर्वप्रथम प्रयोग वर्ष 1980 पुणे में, सूरजमुखी कमल के बड़े साइज 12" (30 सें. मी.) व्यास का दो किलो वजन फूल तथा औसतन तेल मात्रा 250 मिली लीटर प्राप्त हुई।

इसके बाद राहुरी कृषि विश्वविद्यालय में, उदयपुर कृषि विश्वविद्यालय में, मूंगफली कमल पर, जयपुर में सहज कृषि प्रयोग वर्ष 2002 से 2004 तक, ऑस्ट्रिया (यूरोप में) वर्ष 1988 एवम अन्य शोध स्थानों एवं कृषकों की खेती पर आयोजन किया गया।

सहज कृषि कार्यक्रम की उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली दिनांक 20.5. 2015 को किया जिस में 55 कृषि वैज्ञानिक उपस्थित थे। सकारात्मक उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए 10 अनुसंधान केंद्रों पर राजस्थान - 4 परीक्षण, महाराष्ट्र - 4 परीक्षण, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना विभिन्न फांसलों पर परीक्षण किए गए जिनके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

राजस्थान में राष्ट्रीय सहज कृषि कार्यक्रम की शुरुआत दिवाली पूजा अक्टूबर 2011 में हुई। सहज कृषि प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सकारात्मक एवं उत्साह जनक परिणामों को ध्यान में रखते हुए जनवरी 2012 में राष्ट्रीय सहज योग कृषि परियोजना का विस्तृत प्रस्ताव तैयार कर नेशनल ट्रस्ट, दिल्ली भेजा जिसमें 7 सदस्यों की टीम का गठन कर कार्य योजना बनाई गई। उपरोक्त प्रस्ताव नेशनल ट्रस्ट दिल्ली में अनुमोदन के बाद पूरे भारत में दो वर्ष तक सात सहज कृषि सेमिनार/वर्कशॉप का आयोजन कर 780 सहजी कृषि कॉर्डिनेटर प्रशिक्षित कर अपने अपने राज्यों में जिला, ब्लॉक, तहसील, ग्राम पंचायत एवम ग्राम स्तर (5 स्तर पर) प्रशिक्षणों का आयोजन कर कृषकों को प्रशिक्षित किया गया।

इसके अलावा नेशनल ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रत्येक पूजा में सहज कृषि कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शनी का आयोजन कर व्यवहारिक तकनीक प्रदर्शन देकर लाभान्वित किया गया।

सहज कृषि प्रचार-प्रसार एवं सहज कृषि प्रदर्शनी के आयोजन में उत्कर्ष अवार्ड (Excellence Award) राजस्थान, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आई सी ए आर नई दिल्ली, हरियाणा कर्नाटका एवं अन्य राज्यों में प्राप्त हुए। फरवरी 2012 से फरवरी 2023 तक 512 सहज योग कार्यक्रम, वर्कशॉप, सेमिनार, जन जागरण शिविर, फील्ड डे (field day), पिकनिक आयोजन कर लाखों कृषकों को लाभान्वित किया गया।

विदेशों में सहज योग एवम सहज कृषि पर पहला प्रस्तुतीकरण (इन मेडिटेशन एंड प्रोडक्टिविटी इन एग्रीकल्चर) 5 मई 2015 को एक्सपो, मिलान इटली में किया गया जिस में 140 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अलावा कृष्ण पूजा एवम गणेश पूजा 18 से 28 अगस्त 2017 को कबेला इटली में सहज कृषि प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शनी का आयोजन कर 32 देशों के सहज योगियों को जानकारी दी गई।

सहज योग कृषि तकनीक को अपनाकर सकारात्मक रुझान देखने को मिल रहा है। अक्टूबर 2011 मैं लगातार भारत एवं विदेशों में सहज कृषि कार्यक्रम का सराहनीय कार्य हुआ। सहज योग की चेतन लहरियों में फसलों के अंकुरण, फूटान, उत्पाद एवं क्वालिटी में आशातीत वृद्धि देखी गई।

सहज कृषि तकनीक में सर्वप्रथम उन्नत किस्म के बीज व पानी को श्री माताजी के फोटो के समक्ष 24 घंटे रखकर चैतन्यमय किया जाता है। तो इसके बीज का भ्रूण जागृत हो जाता है तथा इन बीजों के बोने से साधारण बीज से 2 से 3 दिन जल्दी अंकुरण के बाद बीज का विकास तेजी से होता है। (पिक अप ग्रोथ) पौधों की बढ़वार अच्छी होने से फसल में आशातीत वृद्धि देखी गई।

सिंचाई में चैतन्यामय पानी के उपयोग से वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर, कृषि उत्पादन एवं क्वालिटी में सकारात्मक वृद्धि देखी गई (करीब 10 से 15% तक उत्पादन में वृद्धि)।

सहजी किसान भाइयों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल एवं व्यवहारिक रूप में वेबसाइट www.sahajakrishi.org हिंदी व अंग्रेजी में तैयार की गई जिसमें सहज कृषि तकनीक, सहज कृषि अनुसंधान/ परीक्षण भारत एवं विदेशों में सफल कहानियां, तकनीकी साहित्य प्रदर्शनी सामिग्री एवं सोशल मीडिया द्वारा प्रचार-प्रसार इत्यादि।

अधिक जानकारी के लिए उपरोक्त वेबसाइट को अवश्य देखें।

जी डी पारेख
नेशनल सहज कृषि कोऑर्डिनेटर
मोबाइल 982 845 1514
ईमेल gdpareek@yahoo.com

डॉ वीरेंद्र सिंह
पूर्व प्रोफेसर सी.एम. वे
कृषि विश्वविद्यालय
पालमपुर, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल 9418045229

नवनीत त्रिपाठी
स्टेट कॉर्डिनेटर
सहज कृषि
राजस्थान
मोबाइल 89638 77777

Sahaja Krishi Booklet
Hindi

सहज कृषि पुस्तिका को अपने स्मार्टफोन में डाउनलोड करने के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।